वीरगाथा - 4.0 कविता

जो कहते नहीं कर दिखलाते,
वो ही सच्चे वीर कहलाते,
मर कर भी जो वचन निभाते,
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

जिन्दगी अगर अपने लिये जिया तो क्या
जो दूजों की खातिर मर जाते,
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

मुमकिन है राहों में काँटे बिछाना
जो राहों में फूल बिछाते
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

आग लगाना, घर जलाना है आसान,
जो उघड़े घर है बसाते,
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

यूँ तो मरते रोज़ हजारों पर
तन के खातिर जो मीट जाते
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

कोई सताएँ लाखों उनको
जो उफ भी नहीं कर पाते
वो ही सच्चे वीर कहलाते,
वो ही सच्चे वीर कहलाते।

Scanned with OKEN Scanner